इकाई 33 क्यागसी सोवियत अनुभव

इकाई की रूपरेखा

33.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप यह समझ सकेंगे कि:

- क्यांगसी सोवियत ने क्या नीतियां अपनायी और ये नीतियां क्वोमिनतांग की नीतियों से किस प्रकार भिन्न थी,
- चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने नेतृत्व में एक देशव्यापी किसान आंदोलन चलाने के लिये क्या रणनीति अपनायी,
- किस प्रकार क्वोमिनतांग और कम्युनिस्ट पार्टी के बीच होने वाला संघर्ष दो अलग-अलग समाजों के निर्माण के लिये होने वाला संघर्ष था,
- क्यांगसी सोवियत ने एक जनतांत्रिक सामाजिक व्यवस्था कायम करने के लिये क्या प्रयास किये, और
- क्यांगसी सोवियत की विफलता के क्या कारण थे।

33.1 प्रस्तावना

जिस ढंग से 1927 में संयुक्त मोर्चे का विघटन हुआ उससे यह बिल्कुल सुनिश्चित हो गया था कि आने वाले वर्षों में चीनी राजनीति का विकास दो बिल्कुल अलग-अलग और स्पष्ट धाराओं में होगा। संयुक्त मोर्चे के दौर में क्वोमिनतांग और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी दोनों ही राजनीतिक बदलाव और सामाजिक रूपांतरण के पक्ष में थे। विघटन के बाद, नानकिंग स्थित चीनी सरकार का प्रतिनिधि, क्वोमिनतांग, स्थापित व्यवस्था का एक माध्यम बन गया, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी क्रांतिकारी बदलाव के लिए संघर्ष करती रही, अमूल कृषि सुधार इस बदलाव का प्रमुख आधार था, इसके अतिरिक्त उसने एक रणनीति अपनायी जिसमें उन विशिष्ट क्षेत्रों या अड्डों पर नियंत्रण शामिल था जहां उसकी नीतियों को लागू किया जा सकता था। इसलिये, व्यवहारिक दृष्टि से जैसा स्वाभाविक था, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नियंत्रण वाले क्षेत्रों का सामाजिक इतिहास नानकिंग स्थित क्वोमिनतांग के नियंत्रण वाले क्षेत्रों से भिन्न था। 1947 में समूचे चीन के साम्राज्यवादी प्रभुत्व से मुक्त हो जाने तक यही स्थिति रही। मुक्ति संघर्ष के विभिन्न चरणों में चीन में साम्यवादी आंदोलन का भी विकास होता रहा। राष्ट्रीय मुक्ति और साम्यवादी विजय दो जुड़वां उपलब्धियां थीं, और साम्यवादियों ने जैसा सोचा था उसी के अनुसार सामाजिक रूपांतरण राष्ट्रीय मुक्ति के साथ-साथ

ही आया। 1928 से 1932 तक साम्यवादियों के नियंत्रण में रहने वाला एक लाल "अड्डा" या क्षेत्र था क्यांगसी सोवियत। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की नीतियों के क्रियान्वयन की दिशा में होने वाला यह पहला प्रयोग था। चीनी जनता को इससे जो राजनीतिक अनुभव हासिल हुआ और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने इससे जो सबक सीखे उनके कारण इसका अपना महत्व है।

इस इकाई में हम क्यांगसी सोवियत अड्डे के निर्माण की पृष्ठभूमि पर विचार करेंगे, जिसमें निम्नलिखित बातें शामिल हैं:

- क्वोमिनतांग के साथ पहले संयुक्त मोर्चे से चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को मिले सबक,
- मज़दूर और किसान आंदोलन, और
- चीनी बूर्जुआ वर्ग की स्थिति में सापेक्ष बदलाव।

इस संदर्भ में इस इकाई में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर इस अनुभव को लेकर चलने वाली बहस पर भी विचार किया गया है। इस बात पर भी विचार किया गया है कि इन बहसों ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के राजनीतिक दृष्टिकोण में आने वाले बदलाव में किस प्रकार योगदान दिया।

इस इकाई में इस बात पर महत्व दिया गया है कि क्यांगसी सोवियत की नीतियां क्या थीं और वे क्वोमिनतांग के नियंत्रण वाले क्षेत्रों में क्वोमिनतांग की नीतियों से किस प्रकार भिन्न थीं।

इस इकाई में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की नीतियों में विद्यमान जनप्रिय तत्वों की विवेचना भी की गयी है। इसके साथ क्यांगसी सोवियत अनुभव के सामाजिक आधार के अंतर को भी रेखांकित किया गया है। क्वोमिनतांग और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के बीच चलने वाले संघर्ष में दो विभिन्न प्रकार के समाजों के निर्माण के लिए था, अर्थात् एक ऐसा चीन जो:

- स्थापित व्यवस्था को जैसा का तैसा रखते हुए एकीकृत, स्वतंत्र और स्वाधीन होगा, और दूसरा
- स्थापित व्यवस्था में पांव जमाये निहित स्वार्थों के विरुद्ध विरोध कर देगा।

क्यांगसी सोवियत इनमें से दूसरे विकल्प का प्रतीक था। इस इकाई में उसकी पराजय के विषय में और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने भविष्य के लिये जो सबक सीखे उनकी भी चर्चा की गयी है।

33.2 पृष्ठभूमि

1927 में वूहान की वामपंथी सरकार की सत्ता ढह गयी परन्तु सैन्यवादियों की सत्ता उत्तरी चीन में जैसी की तैसी बनी रही। फरवरी 1928 में दूसरे उत्तरी अभियान के बाद जाकर ही क्वोमिनतांग अपना नियंत्रण बना पाया, पीकिंग का नाम बदल कर बीजिंग रख दिया गया, और केंन्द्रीय सरकार नानकिंग में कायम कर दी गयी। क्वोमिनतांग का राजनीतिक और सामाजिक रूप काफी बदल गया। 50 प्रतिशत सैनिकों के अतिरिक्त उसमें 21 प्रतिशत अधिकारी थे और 10 प्रतिशत भूस्वामी। संगठन के भीतर जनतांत्रिक कार्यप्रणाली समाप्त हो गयी। क्षेत्रों पर इसका नियंत्रण सैनिक शक्ति, और चीन स्थित पश्चिमी राजनीतिक और सैनिक तंत्र और युद्ध सामंतों जैसी क्षेत्रीय राजनीतिक शक्तियों के साथ समझौते पर आधारित था। जहां तक विचारों का सवाल है, च्यांग काई शेक खुले आम पारंपरिक कन्फ्यूशियसी गुटों के पक्ष में बोल रहा था। जिसका सीधा मतलब यह था कि वर्तमान स्थापित व्यवस्था समाज में जारी रहे। इस समय सन यात सेन के बुनियादी सिद्धांतों की व्याख्या संयुक्त मोर्चे के दौर की तुलना में कहीं अधिक रूढ़िवादी ढंग से हो रही थी, और फासीवादी इटली को अनुसरणीय उदाहरण माना जा रहा था।

अब मुख्य शत्रु साम्यवादियों को समझा जा रहा था क्योंकि मज़दूरों और किसानों के आंदोलन को बेदर्दी के साथ दबाया गया। उदाहरण के लिये:

- जनवरी और अगस्त 1928 के बीच एक लाख मज़दूर और किसान मार डाले गये,
- मज़दूरों ने संयुक्त मोर्चे के दौर में जो आर्थिक लाभ और जनतांत्रिक अधिकार हासिल किये थे वे उनसे छीन लिये गये,

- उनके पारिश्रमिक में जबरदस्त कटौती कर दी गयी,
- काम के घंटे बढ़ा दिये गये और काम की स्थितियाँ बदतर हो गयीं, और
- साम्यवादियों के नेतृत्व वाले श्रमिक संघों पर पाश्विक प्रहार किये गये और उन्हें भूमिगत हो जाने को बाध्य कर दिया गया।

इस दमन के बावजूद मज़दूरों की हड़तालें चलती रहीं। लेकिन, वे केवल आर्थिक मुद्दों तक सीमित, असंगठित और व्यापक तौर पर रक्षात्मक ढंग की रही। संयुक्त मोर्चे के दौर की तुलना में, उनकी गतिविधियां दबी दबी सी रही।

यही हाल किसानों का भी रहा। क्वांगंतुग, हूनान, हूये और क्यांगसी के किसान आंदोलन पहले ही एक जनव्यापी आंदोलन और सशस्त्र संघर्ष का रूप धारण कर चुके थे, कुछ क्षेत्रों में अब किसानों ने अपनी सरकारें कायम करने की कोशिश भी की, लेकिन जमींदारों के संगठित आतंक का दबाव बने रहने के कारण आंदोलन बहुत आगे नहीं बढ़ पा रहा था। इसके अतिरिक्त चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और क्रांतिकारी शक्तियों की शक्ति विभिन्न जनपदों में अलग-अलग होने के कारण किसान आंदोलन का विकास प्रत्येक जगह समान रूप से नहीं हो रहा था।

साम्यवादियों के दमन के बावजूद, क्वोमिनतांग का शासन भी अस्थिर ही था। गृह युद्ध और स्थानीय संघर्ष की स्थिति निरंतर बनी रही। प्रथम विश्व युद्ध के बाद विभिन्न साम्राज्यवादी ताकतों ने जो समझौते किये थे उनमें बाजारों की विकट समस्याओं के कारण पहले ही तनाव बना हुआ था। पूर्व, विशेषकर चीन, का बाजार किसी एक विदेशी ताकत के नियंत्रण में नहीं था, और वह 1927 के बाद विभिन्न ताकतों के बीच झगड़े तेज होने का कारण बना। चीनी युद्ध सांमत और क्वोमिनतांग इन झगड़ों में पड़े बिना नहीं रह पाये, अगस्त 1927 और 1930 के बीच, छह बड़े गृह युद्ध लड़े गये। च्यांग काई शेक अंततः विजेता के रूप में उभरा क्योंकि उसके पास अधिक श्रेष्ठ सेना और अमेरिका का समर्थन था।

लेकिन चीन के स्वाभाविक हितों का समझौता करने वाली ये राजनीतिक शक्तियाँ जनता से पूरी तौर पर अलग-थलग पड़ गयी थीं। उनके शासन और चीनी जनता के हितों के बीच के अंतर्विरोध प्रतिदिन प्रखर होते जा रहे थे, संयुक्त मोर्चे ने राजनीतिक और सामाजिक शक्तियों का जो पुनर्गठबंधन किया था उसमें एक नये ध्रुवीकरण की स्थिति बन रही थी। यह नया ध्रुवीकरण क्वोमिनतांग और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के बीच, साम्राज्यवादी शक्तियों और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व वाले मज़दूरों और किसानों के बीच विकट राजनीतिक संघर्ष के रूप में परिलक्षित हो रहा था। जिन साम्यवादियों की धर-पकड़ हुई, जिन्हें सजा दी गयी और जिन्हें एक संगठन के रूप में भूमिगत होना पड़ा, वे ही साम्यवादी अब मज़दूर वर्ग और शहरों से कट गये थे। उन्हे दूर-दराज के और पहाड़ी देहातों में शरण लेने को बाध्य कर दिया गया। इसी पृष्ठभूमि में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने अपनी शक्ति वापस अर्जित की. संघर्ष के तरीकों को बदला और उसके बाद सोवियत "लाल" अड्डे को कायम किया।

33.3 चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा एक नयी रणनीति का विकास

सन् 1927 में कैंटन और शंघाई में मज़दूर वर्ग के विद्रोहों की पराजय के बाद, और संयुक्त मोर्चे के विघटन के साथ, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने यह निष्कर्ष लिया कि किसान के बीच किया गया काम अत्यधिक फलदायी साबित हुआ था। हूनान और क्वोमिनतांग की सफलताओं को अपना आधार बनाते हुए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने "किसान क्रांति" की नयी रणनीति को अपनाया। उसका सोचना था किः

- रूस के विपरीत, चीन की क्रांति देहातों से शहरों की ओर जायेगी, शहरों से देहातों की ओर नहीं,
- दूसरी साम्यवादी पार्टियों के विप्रीत, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी सर्वहारा पार्टी न होकर किसानों की पार्टी होगी, और
- चीन में राष्ट्रीय मुक्ति और सामाजिक रूपांतरण का आधार किसानी राष्ट्रवाद होगा।

संक्षेप में, यह नयी रणनीति चीन में किसान को क्रांति की अग्रणी शक्ति के रूप में स्वीकार करती थी। उस संबंध में यह तर्क दिया जाता है कि संयुक्त मोर्चा "मास्को अनदायी" था (क्योंकि यह सोवियत नेतृत्व और

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की सलाह पर था) और नयी रणनीति "मास्को अनुदायी" नीति से अलग होने की प्रतीक थी। यह क्रांति का एक विशिष्ट "चीनी मार्ग" था। किसान वर्ग पर माओ त्से-तुंग के लेखों, विशेषकर 1926 में लिखित "हूनान में किसान आंदोलन पर रपट", को इस नयी नीति का आधार बताया जाता है।

फिर भी, स्थिति इतनी सरल नहीं थी। पहले तो, प्रत्येक नया क्रांतिकारी संघर्ष किसी पूर्ववर्ती संघर्ष की नकल नहीं हो सकता, और 1927 से पहले चीनी साम्यवादी या सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी भी ऐसा नहीं सोचते थे। इसके अतिरिक्त, "मास्को अनुयायी नीति" या "चीनी मार्ग" जैसा कोई स्पष्ट विभाजन भी नहीं था। चीनी साम्यवादी जिन सवालों या मसलों पर बहस करते थे वे वही मसले थे जिन पर रूसी साम्यवादियों ने अपने संघर्ष के दौरान बहस की थी। इनमें से कुछ मसले इन मुद्दों से संबंधित थे:

- अंतर्राष्ट्रीय स्थिति का प्रभाव और अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था या ढांचे में उनके देश की भूमिका और स्थान,
- उनके देशों में राज्य का वर्ग चरित्र
- देश में विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक शक्तियों का यह संबंध और संतुलन,
- पश्चिमी यूरोप की अपेक्षा उनके समाजों का पिछड़ापन,
- उनके क्रांतिकारी आंदोलन पर उसके विभिन्न चरणों में इस पिछड़ेपन के परिणाम, और
- इस मुद्दे पर उनके विचार-विमर्शों में किसान मज़दूर गठबंधन का मसला एक महत्वपूर्ण पहलू होना।

जब चीनी साम्यवादी (या सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी भी) चीन में क्रांतिकारी बदलाव के लिये अपने कार्यक्रम पर विचार-विमर्श करते थे तो रूसी अनुभव की भिन्नताओं और समानताओं पर गौर करते थे — ठीक वैसे ही जैसे रूसी साम्यवादियों ने उससे पहले अपनी क्रांति करते समय रूस और पश्चिमी यूरोपीय देशों के बीच भिन्नताओं और समानताओं पर गौर किया था। या, ठीक वैसे ही, जैसे जर्मनी में पूंजीवादी विकास के अध्येताओं ने इंगलैंड और जर्मनी में आर्थिक विकास के बीच भिन्नताओं और समानताओं पर गौर किया था। जैसे इंगलैड पूंजीवादी विकास का अध्ययन करने के लिए एक पक्का आदर्श था, ठीक उसी तरह सोवियत रूस सफलतापूर्वक समाजवादी क्रांति करने वाला पहला और एकमात्र देश था। इसलिए, वह उन सभी के लिये एक आदर्श था जिनका अंतिम लक्ष्य अपने देशों में समाजवाद का निर्माण करना था।

चीनी साम्यवादियों ने यह तो गौर किया ही कि रूसी अनुभव की तरह उनके देश का सामान्य पिछड़ापन एक कमजोर बूर्जुआ वर्ग का कारण बना, साथ ही उन्होंने यह देखा कि उनके पास साथ देने वाला सोवियत संघ जैसा एक विशाल देश था जबकि रूस अपनी क्रांति के समय अकेला ही था। उन्होंने यह भी देखा कि रूस तो अपनी क्रांति से पहले एक साम्राज्यवादी देश था, जबकि चीन एक उपनिवेश था। इन दो महत्वपूर्ण कारकों ने क्रांति की उनकी रणनीति में नये आयाम जोड़े।

फिर भी, चीनी साम्यवादियों ने क्वोमिनतांग के साथ संयुक्त मोर्चे के अपने अनुभव से जो सबक लिये वे उनकी राजनीतिक गतिविधि की भावी दिशा तय करने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारक रहे।

उन्होंने यह महसूस किया कि क्रांति के पहले-जनतांत्रिक-चरण, अर्थात् राष्ट्रीय एकीकरण और जनतंत्र के लिये होने वाले संघर्ष, का नेतृत्व वर्ग के हाथों में ही होना चाहिये, माओ त्से तुंग ने हूनान आंदोलन पर अपनी रपट में किसान वर्ग के निर्णायक, और पूरी तौर पर आवश्यक, रूप से इसमें शामिल होने की बात कही। साथ ही माओ ने उन अनेक सामाजिक, राजनीतिक, वैचारिक और धार्मिक बेड़ियों को भी रेखांकित किया जो किसानों को अंधकार और पिछड़ेपन से जकड़े हुए थीं। माओ ने भी यह समझ लिया था कि बेहद दमन के बावजूद मज़दूर वर्ग के पास अपने राजनीतिक पिछड़ेपन को दूर करने के कहीं आसान अवसर थे, क्योंकि उनके पास शहरों में संगठन के लिये नये विचारों और अवसरों के संपर्क में आने के लिये कहीं अनुकूल स्थितियाँ थीं।

इसलिये, यह मान लेना गलत होगा कि माओ किसान वर्ग के अग्रणी शक्ति होने की बात सोचता था, चीनी साम्यवादी भी यह महसूस करते थे कि जहां तक समाजवाद के उनके अंतिम लक्ष्य का संबंध था, किसान वर्ग निजी संपत्ति की समाप्ति के लिये होने वाले किसी भी आंदोलन में नेतृत्वकारी भूमिका नहीं ले सकता था। उसका बहुत अधिक दांव पर था। और उद्योग के क्षेत्र में निजी संपत्ति की समाप्ति करने में जितना समय और संघर्ष लगता था, उससे कहीं लंबा समय और संघर्ष संपत्ति के समूहीकरण की समूची प्रक्रिया में लगने वाला था। ऐसा इसलिये था क्योंकि मज़दूर वर्ग का संपत्ति पर कोई दावा नहीं था। उसका दावा तो

केवल उसकी मेहनत के पूरे फल पर था। इसलिये, जब चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने किसान वर्ग की ओर अपना ध्यान मोड़ा तो, वह अपनी पहले की अपेक्षा में केवल भूल-सुधार कर रही थी : हूनान के प्रयोगों के समय तक चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने केवल मज़दूर वर्ग पर ही ध्यान केंद्रित किया था।

संयुक्त मोर्चे के दौर के बाद के समय में जो किसान वर्ग पर जोर दिया गया उसका आधार वास्तव में खुद संयुक्त मोर्चे के अनुभव से आने वाली मान्यता थी, यह बात महसूस की गयी कि:

- अकेला मज़दूर वर्ग इतना मज़बूत नहीं था कि वह ज़नतांत्रिक क्रांति कर पाता, और
- बूर्ज़ुआ वर्ग की डांवाडोल स्थिति को देखते हुए मज़दूर-किसान गठबंधन जनतंत्र और सामजिक रूपांतरण की एक मात्र बुनियाद थी – जैसा कि रूस में हुआ था।

वास्तव में, चीन में सामंतवाद-विरोधी कामों में जमींदारी के विरूद्ध, और कृषि सुधार के पक्ष में, होने वाले संघर्ष की जो स्थिति थी उसमें क्रांति की जीत केवल तभी संभव हो सकी जब किसानों को क्रांतिकारी गठबंधन के एक भिन्न घटक के रूप में मिलाया जा सका।

यह भी महसूस किया गया कि अब के बाद क्रांतिकारी संघर्ष एक सशस्त्र संघर्ष होना चाहिये। क्रांतिकारियों को 1927 में इसलिये पराजय का मुंह देखना पड़ा था क्योंकि उनके पास अपनी सशस्त्र सेनाएं नहीं थीं, क्रांतिकारियों के शत्रु वर्ग में अब केवल पुराने युद्धनेता ही नहीं थे बल्कि क्वोमिनतांग के सैनिक भी थे, इसलिये अगर इस शत्रु को पराजित करना था तो यह महत्वपूर्ण था कि एक नयी जन सेना का गठन किया जाये। इसका गठन मज़दूरों और किसानों में से ही किया जा सकता था, लेकिन प्राथमिक तौर पर किसानों में से, जो चीन में बहुसंख्यक थे, वास्तव में, कृषि सुधार की गतिशीलता के लिये किसान वर्ग पर निर्भरता आवश्यक थी।

इसके अतिरिक्त, चीन के अभी तक विभिन्न साम्राज्यवादी ताकतों और युद्धनेताओं के प्रभाव क्षेत्रों में बंटे होने के कारण, भौगोलिक क्षेत्रों, और इन क्षेत्रों में शत्रुओं के अलग-थलग होने, के संदर्भों में यह संघर्ष अक्सर स्थानीय रंग ले लेता था। राजनीतिक सत्ता का इस्तेमाल केवल स्थानीय स्तर पर और विभिन्न स्थानों में इन संघर्षों के सफल या असफल होने कि स्थितियों में ही हो सकता था। इस तरह के संघर्ष की तार्किकता को देखते हुए, हड़ताल की जगह छापामार युद्ध राजनीतिक कार्यवाही का प्रमुख रूप हो गया।

इसके परिणामस्वरूप विभिन्न कथित "लाल अड्डों", "सोवियत अड्डों" "मुक्त क्षेत्रों" और "क्रांतिकारी अड्डों", की स्थापना हो गयी। पहले लाल अड्डे दक्षिण में, दो या तीन प्रांतों की सीमाओं के भीतर दूर-दराज के और लगभग अगम्य क्षेत्रों में कायम हुए। पहले पहल तो, इन अड्डों को केवल सरकारी नियंत्रण के क्षेत्रों से दूर रह कर एक कार्यसाधन, जीवित रहने और शक्ति फिर से प्राप्त करने के एक साधन के रूप में देखा गया। लेकिन बाद में इसने एक नीति का रूप ले लिया जिसने अंततः 1949 में समूचे चीन का साम्यवादियों के नियंत्रण में आना संभव कर दिया।

संघर्ष के इन नये तरीकों पर रातों रात सहमति नहीं बन गयी। ये तरीके तो 1924-1927 के दौरान होने वाले मज़दूरों और किसानों के आदोंलनों के, और पराजय के कारणों के क्रमबद्ध विश्लेषण का परिणाम थे। साम्यवादियों को देहातों और शहरों में वर्ग संबंधों का कहीं अधिक व्यापक विश्लेषण करना पड़ा। उन्हें निम्नलिखित बातें भी सीखनी पड़ीं:

- बूर्ज़ुआ वर्ग के विभिन्न तबकों में भेद करना,
- अपनी नीतियों के लिये कहीं अधिक व्यापक समर्थन बनाना,
- व्यापक समर्थन को ध्यान में रखते हुए नीतियां बनाना, इत्यादि।

उन्होंने निम्न बिदुंओं पर व्यापक बहस की:

- मज़दूर वर्ग और किसान वर्ग के बीच गठबंधन का ठीक-ठीक क्या रूप होना चाहिये,
- शहरों और देहातों में अपनाये जाने वाले संघर्ष के विभिन्न रूप, और
- विभिन्न चरणों में मज़दूर वर्ग और किसान वर्ग का सापेक्ष महत्व।

33.4 उनके प्रारंभिक उपाय और क्रांतिकारी कार्य

1927 में क्वोमिनतांग द्वारा मज़दूरों और किसानों के दबाए जाने के उपरान्त माओ ने अक्तूबर 1927 में चिंग कांगशान पर्वतों में एक क्षीण सेना की सहायता से पहला क्रांतिकारी अड्डा स्थापित किया। क्रांतिकारी सेना का पुनर्गठन "मज़दूरों और किसानों की प्रथम डिविजन" के रूप में किया गया।

इस सेना के अन्तर्गत कुछ शहरों में हो रहे दमन से बचे मज़दूर, कुछ युवा खान मज़दूर, रेल कर्मचारी, स्थानीय किसान और कुछ ऐसे सैनिक शामिल थे जो क्वोमिनतांग सेना को छोड़ आए थे।

यह सेना एक नये किस्म की सेना थी और भाड़े के सैनिकों से भिन्न थी। इस का समर्थन ऐसे लड़ाकू किसानों के द्वारा किया जाता था जिनकी सहायता से सेना एवं आम जनता के बीच सम्पर्क बनाये रखा जा सका। नयी सेना को एक ऐसे सिद्धान्त के अनुसार संगठित किया गया जिसके अन्तर्गत आम जनता को सेना का मूल आधार एवं समर्थक बनना था। इसी ने ही "लाल क्षेत्रों" के राजनीतिक तन्त्र के मूलभूत आधार का निर्माण किया था। सूचना, भोजन की आपूर्ति, स्वच्छता बनाये रखना तथा घायलों की दखभाल करना जैसे आदि कार्यों को स्थानीय जनता के द्वारा ही किया जाता था। भूमि वितरण के जिन उपायों को अपनाया गया उनके फलस्वरूप किसानों का समर्थन प्राप्त हो सका। इस तरह के अनुभव के कारण सैनिकों एवं कृषकों के बीच राजनीतिक चेतना और अधिक सुदृढ़ हुई और इस प्रक्रिया के कारण जहाँ एक ओर चीनी जनता के बीच नवीन विचारों तथा अधिक विकसित परिकल्पना को लागू करने में मदद मिली वहीं इन दोनों को सामाजिक रूपांतरण करने एवं साम्यवादियों के प्रभाव क्षेत्रों को बढ़ाने के लिये भी शामिल किया जा सका। इन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सशस्त्र विद्रोह को किसान आंदोलन के साथ एकीकृत करने में सहायता मिली। इसको साकार करने में चू-तेह ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

लाल क्षेत्रों की स्थापना के लिये चार कार्यों को निर्णायक माना गया था:

- कृषि क्रांति को,
- पीपुल्स आर्मी को शक्तिशाली बनाने को,
- मज़दूर एवं किसान सरकार की स्थापना करने को, और
- कंम्युनिस्ट पार्टी के प्रसार को।

इन सभी कार्यों को पूरा करने का काम चिंग क्यांगशान पहाड़ियों के क्षेत्र में किया गया। रूसी मॉडल के अनुरूप मज़दूरों एवं किसानों के सोवियतों का गठन किया गया। इसके अतंर्गत:

- एक जनसभा में मज़दूरों एवं किसानों की सरकार का चुनाव किया गया और सभी भूमि का अधिग्रहण कर उसे पुनः वितरित किया गया,
- मज़दूरों तथा किसानों की एक सशस्त्र सेना का गठन किया,
- राजनीतिक शिक्षा व्यवस्था की गई, और
- पार्टी संगठन का निर्माण भी किया गया।

इस तरह पीछे हटने के समय को क्रांतिकारी तैयारियां एवं आक्रमण के चरण में रूपांतरित कर दिया गया।

अभी भी कम्युनिस्टों पर कड़ा दबाव बना हुआ था। 1928-29 की सर्दियों के उपरान्त क्रांतिकारियों को चिंग कांगशान की पहाड़ियों को छोड़ने के लिये बाध्य होना पड़ा। क्वोमिनतांग (के.एस.टी.) सेना ने नाकेबन्दी करके पीछे हटती सेना के लिये आवश्यक खाद्य सामग्री की आपूर्ति में रूकावट डालकर गम्भीर समस्या पैदा की। लाल सेना ने ऐसे क्षेत्रों की और कूच कियां जहाँ पर पहले से ही किसान आंदोलन विकसित थे और जिससे उनको मजबूत सामाजिक समर्थन उपलब्ध हो सकता था। 1930 की गर्मियों तक इस तरह के 15 क्षेत्र केन्द्रीय चीन में स्थापित हो चुके थे। चीन की सरकार के लिये इन दूर-दराज के क्षेत्रों में हस्तक्षेप करना कोई सरल कार्य न था और ये क्षेत्र बड़ी शक्तियों के सैनिक एवं वित्तीय प्रभावों से मुक्त थे। इन सभी में क्यांगसी क्षेत्र सबसे महत्वपूर्ण था और चीन का प्रथम सोवियत गणतन्त्र बना।

33.5 क्यांगसी सोवियत गणतन्त्र

इस तरह के प्रयोग के लिये क्यांगसी क्षेत्र का चुनाव अचानक ही नहीं किया गया था। क्यांगसी की अर्थव्यवस्था सामन्ती थी और जमीदारों की सशस्त्र सेनायें अन्य किसी दक्षिणी प्रांत की अपेक्षा काफी कमजोर थीं। यह अपेक्षाकृत किसी तरह के साम्राज्यवादी प्रभाव से मुक्त था और किसी भी क्षेत्र की तुलना में यहां का किसान आंदोलन काफी व्यापक था।

इस नये सोवियत गणतन्त्र का गठन नवम्बर 1931 में किया गया और माओ त्से-तुंग इसका अध्यक्ष बना। इसको "सर्वहारा तथा किसानों की जनवादी डिक्टेटरशिप" कहकर परिभाषित किया गया। इसके अस्तित्व का मूलभूत आधार कृषि क्रान्ति थी।

क्यांगसी सोवियत की कृषि नीति का आधार किसानों का वह वर्गीकरण था जिसका विश्लेषण माओ ने अपने हुनान प्रांत के अध्ययन में किया था। माओ के "चीन में लाल राजनीतिक शक्ति कैसे विद्यमान है" "चिंगकांग के पर्वतों में संघर्ष" और "एक चिंगारी क्रान्ति की आग को प्रज्जवलित कर सकती है" जैसे लेखों में चीनी कृषि क्रान्ति, इसकी वर्ग संरचना, तथा इस रणनीति का विश्लेषण किया गया था जिसका अनुसरण चीन में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने किया।

ग्रामीण-चीन की वर्ग सरंचना का विश्लेषण करते हुए माओ ने स्पष्ट किया कि क्रान्ति के मुख्य शत्रु जमींदार थे क्योंकि कृषि की सामन्ती व्यवस्था तथा सामन्ती सम्पति व्यवस्था को बनाये रखने के लिये वे प्रत्यक्ष तौर पर दावेदार थे। ये ग्रामीण परिवारों के मात्र 10 प्रतिशत थे और इनके पास आधे से कुछ अधिक भूमि थी तथा ये ही अधिकतर ऐसे ग्रामीण थे जो खेती नहीं करते थे।

ग्रामीण मज़दूरों के साथ-साथ किसानों को धनी, मध्यम एवं गरीब किसानों की श्रेणी में रखा जा सकता था।

- धनी किसान ऐसे किसान थे जो कृषि कार्यों की व्यस्तता के समय परिवार से बाहर के लोगों को मजदूरी पर रखते थे और उनके पास औसतन मध्यम किसान की अपेक्षा कुछ अधिक भूमि होती थी।
- मध्यम किसान वे थे जो सामान्य वर्ष में अपनी आवश्यकताओं को किसी को मज़दूरी पर रखकर या फिर दूसरे के यहाँ पर कार्य को करके पूरा करते थे।
- गरीब किसान परिवार वे थे जो अपने भरण-पोषण के लिए एक या एक से अधिक सदस्य की मज़दूरी पर निर्भर करते थे और ऐसे किसानों के पास मध्यम किसानों की अपेक्षा कम भूमि होती थी।

गरीब किसान सामान्यतः कर्ज के बोझ से दबे होते थे जबकि मध्यम किसानों पर मौसमी कर्ज होता था और धनी किसानों पर अस्लामी था कभी-कभी कर्ज होता था। इस तरह ये ऐसी विशेषताएं थीं जिनके आधार पर क्यांगसी प्रयोग के दौरान कम्युनिस्टों ने अपनी कृषि नीति का निर्धारण किया। इसी विशेषता के आधार पर उन्होंने गरीब किसानों पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया और उन्होंने ही कम्युनिस्टों के प्रति सबसे अधिक उत्साह दिखाया तथा ये गरीब किसान ही चीनी क्रान्ति की आधारशिला बने।

नवम्बर 1931 में चीनी सोवियतों के प्रथम सम्मेलन में कृषि कानून का निर्माण एंव उसको पारित किया गया। इससे उन नीतियों में बदलाव दिखायी पड़ता है जिनका अनुसरण 1926-28 के वर्षों में उस समय किया गया था जबकि माओ त्से तुंग ने जमींदारों सहित धनी किसानों की भूमि पूर्ण रूपेण तथा "समझौता विहीन" अधिग्रहण करने का आह्वान किया था। कुओमिनतांग के साथ संयुक्त मोर्चे के भंग हो जाने एवं पूंजीपति वर्ग के द्वारा इसके साथ सहयोग करने के कारण, माओ ने यह महसूस किया कि कम्युनिस्टों के इस अलगाव की भरपाई धनी किसानों के साथ सहयोग करने से पूरी की जा सकती थी और इस सहयोग को इस वास्तविकता के साथ प्राप्त किया गया कि निर्धन किसानों ने आंदोलन को मुख्य आधार उपलब्ध कराया था। किसानों ने एक वर्ग के रूप में क्रान्तिकारी भूमिका का निर्वाह किया जो पूंजीपति वर्ग नहीं कर सकता था।

1931 के कृषि कानून द्वारा केवल जमींदारों की भूमि का अधिग्रहण किया जा सका। इस भूमि अधिग्रहण को बगैर किसी मुआवजे के किया गया। ये सोवियत किसानों एवं सैनिकों के निर्वाचित संगठन थे और उन्होंने निर्धन तथा मध्यम किसानों को अधिग्रहीत की गई भूमि का वितरण किया।

भूमि का पुनर्वितरण समान वितरण के आधार पर किया गया और इस वितरण का आधार किसान परिवार के सदस्यों तथा श्रम पर आधारित था। जो भूमि मंदिर एवं अन्य इस तरह की धार्मिक संस्थाओं से संबंधित थी उसको भी किसानों के बीच वितरित किया गया। धनी किसान को इस शर्त पर कुछ भूमि प्रदान की गई कि वह इस भूमि पर कार्य बिना किसी मज़दूर के करेगा और क्रन्तिकारियों के विरुद्ध होने वाली किसी भी तरह की गतिविधि में भाग नहीं लेगा। ऐसे धनी किसानों के लिये राहत की व्यवस्था की गई जो अपनी अधिग्रहित की गई भूमि को वापस खरीदना चाहते थे या ऐसे मध्यम किसानों के लिये भी जो अपनी जोत को और बढ़ाना चाहते थे। अन्ततः यदि किसानों का बहुमत इसको स्वीकार कर लेता है तब समान वितरण के नये कृषि सुधार को लागू किया जा सकता था।

यह महसूस किया गया कि ऐसा मध्यम किसान जो दूसरों का शोषण नहीं करता – वह भूमि के पुनर्वितरण की प्रक्रिया में विशेष रुचि रखता था क्योंकि इससे उसे कुछ और भूमि प्राप्त होने की सम्भावना थी। क्योंकि इस किसान का शोषण एवं दमन साम्राज्यवादी शक्तियों, जमींदारों एवं पूंजीपतियों के द्वारा किया जाता था इसलिये इस वर्ग को राजनीतिक तौर पर शिक्षित करने पर बल दिया गया जिससे वह जनवादी क्रान्ति की शक्तियों का समर्थन करने लगे। यही कारण था कि कृषि क्रान्ति की नीति के अन्तर्गत मध्यम किसानों के साथ एकता करने पर बल दिया गया। इसके अतिरिक्त जब भूमि के पुनर्वितरण को पूरा कर दिया जायेगा तब ग्रामीण अंचलों में वह भी साधारण जनता का एक भाग हो जायेगा। इस तरह की कृषि क्रांति से यह लाभ होगा कि यह मध्यम किसानों के हितों का उल्लंघन न कर सकेगी। धनी किसान दूसरों का शोषण करते थे परन्तु जमींदारों की तुलना में उनके पास न केवल कम भूमि थी बल्कि उनका राजनीतिक एवं सामाजिक प्रभाव भी बहुत कम था। उनका जो कुछ मजबूत सम्पर्क एवं प्रभाव था वह केवल गाँव के किसानों तक ही सीमित था न कि राज्य के ढांचे पर। इस नीति के द्वारा तथा धनी किसानों की शक्ति को सीमित करने, तथा धनी किसान अर्थव्यवस्था को उखाड़ने की अपेक्षा उसको निष्कासन का अवसर प्रदान किया गया।

इसी के साथ-साथ हमें यह भी याद रखना चाहिये कि जिस समय चीन के साम्यवादी जमींदारों को समाप्त करने या जमींदारी अर्थव्यवस्था को उखाड़ फेंकने की बात करते थे तब उनका यह तात्पर्य न था कि वे उनकी हत्या करना या उनकी भू-सम्पत्ति को नष्ट करना एवं लूटना चाहते थे। इससे केवल उनका यह तात्पर्य उनकी भूमि की अर्थव्यवस्था के आधार को परिवर्तित करने से था। इस भूमि का अधिग्रहण करके और उसे नये स्वामियों को प्रदान कर नयी अर्थव्यवस्था के नियमों के आधार पर उत्पादन के लिये उपयोग करना था अर्थात् मध्यम तथा निर्धन किसान इसके स्वामी होंगे और वे इस पर स्वयं अपने श्रम से कार्य करेंगे। जो बहुत से जमींदार हिंसा के दौरान मारे गये वे बदनाम किस्म के थे या फिर उस समय जबकि उन्होंने क्रांतिकारी प्रक्रिया का विरोध किया। वास्तव में बहुत बड़ी संख्या में निर्धन किसान एवं साम्यवादी सामाजिक रूपांतरण के लिये हुए संघर्ष के दौरान मारे गये।

संक्षेप में, सामाजिक संबंधों के दृष्टिकोण से ग्रामीण अंचलों में इस कृषि नीति का लक्ष्य स्वयं को निर्धन किसानों तथा खेतिहर मज़दूरों के समर्थन मध्यम किसानों के साथ एकताबद्ध करने, तथा शक्तिविहीन जमींदारों की अनुपस्थिति में धनी किसानों को नये शोषकों के रूप में उदित होने से रोकने की मजबूत नीति पर आधारित था। कृषि परिवर्तनों की सम्पूर्ण प्रक्रिया ग्रामीण अंचलों में स्वामित्व के प्रतिमान का रूपांतरण निहित होने के कारण यह एक वर्ग संघर्ष का स्वरूप ही था। इन परिवर्तनों के कारण निर्धन एवं मध्यम किसानों को अधिक भूमि प्राप्त हुई जिससे कि वे ग्रामीण अंचलों में महत्वपूर्ण कारक हो गये। निर्धन किसानों को अधिक भूमि प्राप्त हुई क्योंकि इन परिवर्तनों से पूर्व उनके पास काफी कम भूमि थी। अब वे सम्पत्ति विहीन न थे। अब उनके पास आमदनी को बढ़ाने एवं उत्पादन करने के स्रोत थे और न ही अब वे शोषित-पीड़ित थे। उन्होंने सम्पूर्ण प्रक्रिया में भाग लिया था जिसके कारण ग्रामीण अंचलों के राजनीतिक संगठन तथा प्रशासन में उनका महत्वपूर्ण स्थान हो गया था और यह पूर्ण रूप से एक नया अनुभव था।

कृषि क्रांति का लक्ष्य उत्पादन में वृद्धि करना भी था। वास्तव में स्वामित्व के संबंधों में हुए परिवर्तनों के फलस्वरूप उत्पादन की प्रक्रिया में भी एक निर्णायक बदलाव आया। इसको निम्न प्रकार से रेखांकित किया जा सकता है:

- उत्पादन के पिछड़े एवं सामन्ती तरीकों से भूमि की विशाल मात्रा को अलग करके,
- कड़े परिश्रम तथा उत्पादन में वृद्धि करने के लिये सम्पूर्ण किसान वर्ग को प्रोत्साहित करके, और

- किसानों के बीच बाजार को बढ़ाकर जिससे कि उनको कृषि उत्पादनों के बेहतर दाम प्राप्त हों और इस कारण से उनकी खरीदने की शक्ति अधिक हो जाये।

लेकिन इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये बहुत दिनों तक क्यांगसी में सोवियत गणतन्त्र को बनाये न रखा जा सका। परन्तु जब तक इसका अस्तित्व बना रहा तब तक इसने यह सुनिश्चित किया कि किसान अपने श्रम का पूरा फल प्राप्त कर सकते थे और कृषि परिवर्तनों से पूर्व के सभी कर्जों को इसने खारिज कर दिया था।

33.6 क्यांगसी अड्डे में नया राजनीतिक संगठन

न केवल क्यांगसी अड्डे में अपितु सभी लाल क्षेत्रों में कृषि सुधार का महत्वपूर्ण पक्ष खेतिहर मज़दूरों की यूनियनों तथा अन्य दूसरे संगठनों को संगठित करना था। इन जन संगठनों तथा यूनियनों ने कृषि सुधार को लागू करने में सक्रिय तौर पर भाग लिया। उन्होंने स्थानीय सोवियतों के साम्यवादी अधिकारियों तथा पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ क्षेत्र में कार्य किया था। भूमि का एक बार अधिग्रहण करने के पश्चात उसको श्रेणीबद्ध किया गया और फिर उसको वितरित कर दिया गया। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया खुली एवं सार्वजनिक थी। किसानों तथा सैनिकों को उन सोवियतों के लिए निर्वाचित किया गया जिसने मज़दूरों एवं किसानों की नई सरकार के लिये संगठनात्मक ढांचा तैयार किया। जो मध्यम वर्गीय किसान जिला तथा कस्बों के स्तरों की स्थानीय सरकारों में कार्य कर रहे थे उनकी संख्या 40 प्रतिशत थी। कस्बों के स्तर पर मुख्य कार्यकर्त्ता निर्धन किसान एवं मज़दूर थे। वे नयी सरकार की मुख्य आधारशिला भी थे। इस तरह राजनीतिक लाभ ने आर्थिक लाभ को बढ़ाया क्योंकि अब उन्होंने उस राजनीतिक शक्ति को प्राप्त कर लिया था जिसने उनको अपने स्वयं के भविष्य को निश्चित करने तथा निर्णय करने की प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर प्रदान किया।

बोध प्रश्न 1

1) "लाल आधार" को स्थापित करने के लिये कौन-कौन से मुख्य कार्यों को किया गया। पांच पंक्तियों में विवेचना कीजिये।

....

....

....

....

....

2) क्यांगसी सोवियत के दौरान स्थापित किये गये कृषि कानून की विवेचना 10 पंक्तियों में कीजिये।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3) **धनी, मध्यम तथा निर्धन किसानों पर कृषि नीति का क्या प्रभाव हुआ। इसका उत्तर लगभग 10 पंक्तियों में दें।**

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

33.7 लाल सेना की भूमिका

नवीन भूमि नीति तथा क्यांगसी एवं अन्य लाल आधारों के बने रहने की सफलता के लिये संघर्ष के तरीकों हेतु छापामार युद्ध प्रणाली को अपनाना निर्णायक था। जैसा कि पहले भी बताया गया कि संयुक्त मोर्चे में आये विघटन एवं आगामी राजनीतिक परिस्थितियों के कारण ऐसा करना आवश्यक हो गया था। इन अड्डों की स्थापना संगठित किसानों के द्वारा किये गये सशस्त्र संघर्ष का परिणाम थी। क्यांगसी सोवियत गणतंत्र के सम्पूर्ण निर्माण की प्रक्रिया में लाल सेना ने इस संघर्ष में एक औजार की भूमिका निभाई। सेना का राजनीतिकरण पार्टी के कृषि क्रांति के कार्यक्रम को लागू करने के लिये किया गया। सेना के अन्दर राजनीतिक कार्य की व्यवस्था को मजबूत किया गया। इस तरह से लाल सेना का कार्य केवल युद्ध करना न था अपितु इसने, राजनीतिक शिक्षा एवं प्रचार कार्य के अतिरिक्त जनता को संगठित करने, तथा कृषि क्रांति को लागू करने में निर्णायक भूमिका अदा की।

सैनिकों के लिये भी निम्नलिखित कुछ महत्वपूर्ण नियम थे:

- आज्ञाओं का पालन करना,
- जनता से कुछ न लेना,
- अधिकार में किये गये सभी सामानों को अधिकारियों को वापस करना,
- फसल की कटाई को नुकसान न पहुँचाना, और
- महिलाओं को कष्ट न देना तथा कैदियों के साथ दुरव्यवहार न करना।

उनको यह स्पष्ट तौर पर समझा दिया गया कि:

- लाल सेना युद्ध के वास्ते युद्ध नहीं करती अपितु उसका कार्य जनता के लिये, जनता को सशस्त्र करना एवं क्रांतिकारी शक्ति को स्थापित करने में जनता की मदद करना है।

इस तरह लाल सेना क्वोमिनतांग की सेना से काफी भिन्न थी। यह सना तकनीकी एवं हथियारों के दृष्टिकोण से अधिक मजबूत न थी किन्तु यह गरीब चीनी जनता के पक्ष में एवं आम जनता के निकट सम्पर्क में थी। सहित लाल रक्षकों को स्थानीय जनता से भर्ती किया गया था और इन लाल रक्षकों ने सैनिकों के कार्यों को स्थानीय इकाइयों [illegible] लड़ाकू तंत्र के साथ जोड़ने में योगदान किया। युद्ध की छापामार प्रणाली को स्थानीय समर्थन के द्वारा ही सफल बनाया जा सकता था। इसलिए लाल सेना की यह भूमिका जनता के बीच अपनी ताकत को आम जनता के बीच इस तरह विस्तृत करने में बहुत अधिक महत्वपूर्ण थी जिससे कि जनता को सामन्ती जमींदारों एवं साम्राज्यवादियों के विरुद्ध युद्ध के लिए एक पार्टी बनाया जा सके। शत्रु पर आक्रमण करने में इस की शक्ति को केन्द्रित करने के लिये स्थानीय जनता ने

खाद्य सामग्री, संचार तथा घायलों की देखभाल करने जैसे सहायक कार्यों को पूर्ण करने में सहायता उपलब्ध करायी। पश्चिम के दो डॉक्टरों डॉ. ऐगनेज स्मेडलेई तथा डॉ. नोर्मन बेथ्यून और भारत के डॉ. कोटनीस ने उन मेडिकल इकाइयों को निर्मित करने में महत्वपूर्ण योगदान किया जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में लाल सेना को संघर्ष करने में सहायता प्रदान की।

33.8 राजनीतिक चेतना और सामाजिक प्रगति

इस विशाल संगठनात्मक ढांचे के अन्तर्गत विद्यमान लाल सेना, सोवियतों, खेतिहर मज़दूरों की यूनियनों, मेडिकल इकाइयों एवं किसान संगठनों ने नयी जनवादी सरकार के आधार स्तंभों को गठित किया। उन्होंने राजनीतिक शक्ति के नये अवयवों को बनाया। जमींदार साम्राज्यवादियों की शक्ति के समर्थन का मुख्य आधार थे और उनकी राजनीतिक तथा सामाजिक स्थिति को तहस-नहस कर दिया गया तथा उनके स्थान पर जनवादी संगठनों के प्रभुत्व की स्थापना हुई। इस प्रक्रिया ने जनता के विश्वास एवं राजनीतिक चेतना में वृद्धि की। राजनीतिक अध्ययन केन्द्रों को संचालित किया गया। इन अध्ययन केन्द्रों के द्वारा लोगों को यह ज्ञान हुआ कि उनका समाज कैसा था और उन्होंने यह भी महसूस किया कि वे ही स्वयं अपने भविष्य के निर्माता हैं। इस तरह से हुनान में उन्होंने निम्नलिखित कार्यों को किया:

- संघर्ष के दौरान काला बाजार एवं कीमतों में वृद्धि को रोकने के लिये कदम उठाये,
- जुआ एवं डकैती पर प्रतिबंध लगाया,
- उपभोक्ता बाजारों एवं ऋण-सहकारी समितियों को स्थापित किया,
- वंशीय प्रभुत्व तथा धार्मिक संस्थाओं के द्वारा किये जाने वाले दमन एवं शोषण जैसी सामाजिक बुराइयों का विरोध किया,
- महिलाओं की एकता के प्रश्न को उठाया जिससे सम्पूर्ण रूपांतरण की प्रक्रिया समान तौर पर हिस्सेदार हो गई, और
- किसानों के पढ़ने एवं लिखने के लिये रात्रि स्कूलों को खोला।

डॉ. नोर्मन बेथ्यून की मेडिकल इकाई में किसानों ने प्रथम बार एक प्राणी के रक्त को दूसरे में प्रवाहित करने में सफलता का प्रदर्शन किया और उन्होंने यह भी सीख लिया कि इसका क्या तात्पर्य था। इसी प्रकार से नये-नये अनुभवों ने उनके पिछड़े मस्तिष्क के बंधनों को तोड़ नये दृश्यों के लिये मार्ग को प्रशस्त किया। सभी कुछ रातों-रात बदलने वाला न था और इस तरह के मार्ग पर चलकर बहुत सी गलतियां भी हुईं। फिर भी उस विशाल जन समुदाय के लिये चीजों में परिवर्तन होना प्रारम्भ हो चुका था जो अभी तक विश्व की नयी प्रगति से अनभिज्ञ था।

इस प्रकार राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक कार्यों को इस तरह से एकताबद्ध किया गया कि चीन के ग्रामीण अंचलों की जनता के सबसे पिछड़े हिस्से भी इस सम्पूर्ण रूपांतरण का एक भाग बन गये। सबसे अधिक पिछड़े इलाके संगठन एवं सरकार की दृष्टि में क्रांतिकारी एवं राजनीतिक तौर पर सबसे अधिक विकसित हो गये। इस संघर्षों का नेतृत्व करने में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इस दौरान विशेष रूप से माओ त्से-तुंग लोकप्रिय एवं सम्मानीय नेता हो गया।

33.9 शहरी वातावरण

अगर मज़दूर वर्ग के आंदोलन की सफलता के दृष्टिकोण से विचार किया जाये तब हम देखते हैं कि इन वर्षों में शहरों में कोई विशेष प्रगति न हुई थी। परन्तु ग्रामीण अंचलों में किये गये प्रयोगों ने राजनीतिक नैतिक व्यवस्था, चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की विचारधारा एवं मज़दूर आंदोलन को प्रभावित किया। यद्यपि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी में गहरे मतभेद एवं विभाजन थे, लेकिन लाल क्षेत्रों मे माओ की सफलता ने चीन की कम्युनिस्ट पार्टी को एक नवीन दिशा प्रदान की। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी में निम्न दो प्रकार के दृष्टिकोणों की प्रमुखता थी:

1) प्रथम वे थे जिन्होंने शहरों में क्रांतिकारी आंदोलन को कुछ अधिक बढा-चढ़ाकर समझा तथा उन शक्तियों की ताकत को कम करके देखा जो क्रांतिकारी शक्तियों का विरोध कर रहे थे, और
2) दूसरे वे थे जिन्होंने कृषि क्रांति की उपलब्धियों को कम करके देखा तथा प्रति क्रांतिकारी शक्तियों की ताकत को कहीं अधिक समझा । लेकिन माओ त्से तुंग की रणनीति की शुद्धता को मान्यता प्रदान की गई और प्रशंसा भी ।

साम्यवादियों ने स्वय अपने लिए क्यांगसी एवं अन्य लाल क्षेत्रों में जन समर्थन को प्राप्त किया । प्रथम जनवादी सरकार के दृष्टांत से उन्होंने यह समझा कि जहां एक ओर यह कृषि क्रांति का प्रतिनिधित्व करती थी, वहीं पर दूसरी ओर इसका निर्देशन वर्ग संघर्ष के सिद्धांतों एवं समाजवादी विचारधारा के द्वारा किया गया था । इस सच्चाई का श्रेय चीन की कम्युनिस्ट पार्टी को ही जाता है कि यह क्रांति इस चरण में स्वयं किसानों पर आधारित थी फिर भी यह आर्थिक एवं राजनीतिक उद्देश्यों के दृष्टिकोण से शुद्ध तौर पर कृषिवाद या अति लोकप्रियवाद का शिकार न बन पायी ।

कुल मिलाकर यह एक ऐसी जागरूकता थी जिसकी अभिव्यक्ति राष्ट्रवाद के उभार के तौर पर हुई । जापानी आक्रमण ने चीनी समाज के सभी भागों में सक्रिय विरोध की एक प्रतिक्रिया को जन्म दिया । यद्यपि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने इन जापान-विरोधी आंदोलनों में व्यापक स्तर पर भाग न लिया था और न ही उनका नेतृत्व कर पायी थी फिर भी उसने इन आंदोलनों की क्षमता को रेखांकित किया । चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने सामन्तवाद, साम्राज्यवाद एवं बड़े पूंजीपतियों के विरुद्ध सम्भावित व्यापक आधार को सुदृढ़ करने की नीति का अनुसरण किया किन्तु सामन्त एवं बड़े पूंजीपति साम्यवादियों का विरोध करने के लिए साम्राज्यवादियों के साथ मिल गये । इसलिए चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने छोटे व्यापारियों एवं उद्योगपतियों का विरोध न करने का निश्चय किया । उसने व्यर्थ के करों एवं शुल्कों को समाप्त करने की मांग की और इस तरह से बड़े पूंजीपतियों एवं साम्राज्यवादियों के विरुद्ध उनके समर्थन को सुनिश्चित कर लिया ।

यह समय शहरी वातावरण में साहित्यिक गतिविधियों के उभार के लिए महत्वपूर्ण था । सजीव रचनाओं ने समय की सामाजिक वास्तविकताओं को अभिव्यक्त किया । चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के प्रयासों के कारण 1930 में गठित चीनी वामपंथी लेखकों का संगठन सबसे अधिक महत्वपूर्ण था । इन लेखकों ने साहित्य एवं समाज के एक प्रगतिशील दृष्टिकोण को सामने रखा और राष्ट्रवादी सरकार की जनविरोधी नीतियों के कारण उनकी आलोचना की । अपने बहुत से प्रकाशनों के द्वारा शहरों में बौद्धिक वातावरण को रूपांतरित करने में महत्वपूर्ण योगदान किया । सबसे अधिक महत्वपर्ण लेखक लू सून (1881-1936) था । उसने अपनी रचनाओं में पुरानी एवं विद्यमान व्यवस्था के पतन एवं अन्याय की आलोचना की और उसने परम्परागत जीवन के ढोंग तथा क्रूरता पर भी आक्रमण किया ।

बहुत से महिला संगठन भी इन वर्षों में सक्रिय हो गये थे । ये संगठन केवल महिलाओं की समस्याओं तक सीमित न थे अपितु सम्पूर्ण समाज एवं परिवर्तन की प्रक्रिया पर भी उन्होंने अपना ध्यान केन्द्रित किया ।

33.10 पराजय

चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने जो परिवर्तन किये उनसे यह स्वाभाविक ही था कि उनको चीन के शासक वर्गों ने पसन्द नहीं किया । क्वोमिनतांग ने पूर्णतः एक भिन्न प्रकार की नीति का अनुसरण किया और उसने कम्युनिस्टों का अथक विरोध भी किया । क्वोमिनतांग का समर्थन जमींदारों के द्वारा किया गया था । 1930-1934 के बीच क्वोमिनतांग ने च्यांग काई शेक के नेतृत्व में जमींदारों के द्वारा समर्थित कम्युनिस्टों के विरुद्ध उखाड़ फेंकने वाले पांच अभियानों को चलाया गया । पांचवां अभियान क्यांगसी क्षेत्र के विरुद्ध संचालित किया गया । महीनों तक घेरेबन्दी एवं अवरोधक तरीकों का अनुसरण करते रहने के कारण सोवियत गणतंत्र के लिये असहाय स्थिति पैदा हो गई । अन्ततः अगस्त 1934 में, स्थिति भयंकर तौर पर खराब हो गई और क्यांगसी क्षेत्र का परित्याग कर देना पड़ा । कम्युनिस्टों ने अवरोधों को चीरकर अपने मार्ग को प्रशस्त और इस तरह महान अभियान का प्रारंभ हुआ (देखें इकाई 34) ।

बोध प्रश्न 2

1) लाल सेना ने क्यांगसी गणतंत्र को बनाने में कैसे मदद की? इसकी विवेचना लगभग 10 पंक्तियों में करें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) लाल सेना की विशेषताओं की 5 पंक्तियों में विवेचना कीजिये।

....

....

....

....

....

33.11 सारांश

1927 में संयुक्त मोर्चे के नाम से जाने गये क्वोमिनतांग-कम्युनिस्ट गठबंधन के टूट जाने से चीन के कम्युनिस्ट आंदोलन के अन्दर अनिश्चय, भटकाव एवं संगठनात्मक संकट पैदा हो गया था। पार्टी संगठन टूट के कगार पर था। इसके नेतागण ऐसे सैद्धान्तिक ढांचे की तलाश में थे जिससे कि वे राष्ट्रीय मुक्ति के आंदोलनों का संचालन, पार्टी ढांचे का पुनर्गठन तथा जनता एवं पार्टी के बीच की दूरी को कम कर सके। चीन इस समय जिस संकट का सामना कर रहा था उसका समाधान सोवियत मॉडल में ही दिखाई देता था।

क्यांगसी सोवियत निस्सन्देह इस सैद्धांतिक ढांचे का एक बड़ा प्रयोग था। उत्तर संयुक्त मोर्चे के वर्षों में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की नीति सर्वहारा की चिन्ता एवं शहरी चीन के परित्याग के बीच के असमंजस्य की नीति थी। यह स्पष्ट है कि संयुक्त मोर्चे की असफलता के बाद शहरी चीन के अन्दर कम्युनिस्टों की नीतियों के पूर्ण केन्द्रण में काफी सीमा तक कमी आयी। क्यांगसी सोवियत को मुख्य तौर पर चीन के ग्रामीण क्षेत्रों में विकसित किया गया। माओ त्से तुंग जैसे महत्वपूर्ण कम्युनिस्ट नेताओं ने नगर से ग्रामीण क्षेत्रों तथा सर्वहारा के साथ संगठनात्मक कार्य से किसानों के लिये कृषि क्रांति की ओर बढ़ना शुरू किया।

33.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) सामाजिक जनतान्त्रिक व्यवस्था कृषि विकास, किसानों एवं सर्वहारा की तानाशाही की स्थापना करना। देखें भाग 33.4
2) कांग्रेस के द्वारा कृषि कानून को पारित किया गया। यह संयुक्त मोर्चे के काल से काफी भिन्न था। 1931 के कृषि कानून ने भूमि के अधिग्रहण करने के अधिकार को प्रदान किया। देखें भाग 33.5।
3) देश के अन्दर खेतिहर मजदूरों की यूनियनों एवं संगठन का विकास शुरू हुआ। बड़े-बड़े लाल आधारों में कृषि सुधारों को लागू करने के वे मुख्य संवाहक बन गये। इन सभी जन संगठनों ने एक साथ मिलकर सक्रिय रूप से कार्य किया। देखें भाग 33.6

बोध प्रश्न 2

1) संघर्ष के एक महत्वपूर्ण तरीके के रूप में छापामार युद्ध को अपनाया जाना लाल सेना में एक लोकप्रिय तरीका हो गया। इसके द्वारा काफी बड़ी सीमा तक किसानों को संगठित किया जा सका। इसने जनता को संगठित करने तथा कृषि सुधारों को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। देखें भाग 33.7
2) लाल सेना की मुख्य विशेषता कड़ा अनुशासन, जनता से कुछ न ग्रहण करना, तथा बन्दी बनाये गये लोगों के साथ दुरव्यवहार न करना था। देखें भाग 33.7